वेबीनार आख्या
दिनांक 22 जून 2020

Date :
Page No. :

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्च शिक्षा विभाग, एक भारत श्रेष्ठ भारत प्रकोष्ठ, नई दिल्ली के पत्रांक संख्या F. No. 11018/02/2019-EBSB (Vol. I), दिनांक 22 मई 2020 एवं राज्य परियोजना निदेशालय (उ०प्र०), राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) के पत्रांक संख्या 1663/SPD/RUSA/377/19, दिनांक 05-06-2020 के 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अन्तर्गत डिजीटल मोडिया के माध्यम से गतिविधियों को आयोजित करने विषयक निर्देशों के अनुरूप 'देखो अपना देश' कार्यक्रम के आलोक में पं० कमलापति तिपाठी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चंदौली, उ०प्र० में धरोहर : देखो अपना देश' विषय पर एक एक-दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन 22 जून 2020 को किया गया। इस राष्ट्रीय वेबीनार में देश एवं प्रदेश के विभिन्न भागों से यथा; नई दिल्ली, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, पुदुचेरी, कर्नाटक, झारखंड इत्यादि विद्वतजन, वक्तागण एवं प्रतिभागी सम्मिलित हुए। प्रातः 10:30 बजे से प्रारंभ यह वेबीनार चार भागों क्रमशः; उद्घाटन सत्र, पैनल चर्चा सत्र, तकनीकी सत्र एवं समापन सत्र में विभाजित था जो सायं 5:45 बजे तक बिना किसी अन्तराल के क्रियाशील रहा और जिसमें भारतीय धरोहर के प्रदर्शन, संरक्षण एवं प्रोत्साहन से संबंधित विभिन्न पहलूओं पर विस्तार से चर्चा किया गया।

उद्घाटन सत्र का प्रारंभ डॉ० राजनाथ यादव, उपाचार्य, संस्कृत एवं महाविद्यालयीय समन्वयक, RUSA द्वारा मंगलाचरण एवं माँ सरस्वती स्तोत्रम् प्रस्तुत कर किया गया। तत्पश्चात् डॉ० सुकृति मिश्रा, उपाचार्या, अर्थशास्त्र एवं आयोजन सचिव ने भारतीय परंपराओं को महत्व देते हुए अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण श्री संजय कुमार दिवाकर, उप निदेशक, RUSA, उ०प्र० के द्वारा दिया गया जो वर्तमान भारत सरकार एवं उ०प्र० सरकार के महत्वाकांक्षी योजना से प्रतिभागियों का अवगत कराया और इस संबंध में सरकार के भविष्य की योजनाओं की भी जानकारी दी जिसमें 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के

Scanned with CamScanner

दृष्टिगत छात्र-छात्राओं द्वारा शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर और तदनुपरान्त उन्हें प्रमाण-पत्र देना सम्मिलित है। उन्होंने छात्र-छात्राओं मध्य Logo (लोगो) प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को पुरस्कृत करने की सरकार की योजना को भी लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने पर्यटन के माध्यम से 'देखो अपना देश' जो माननीय प्रधानमंत्री का आह्वान है, योजना की सफल बनाने हेतु सभी प्रतिभागियों का आह्वान किया। बीज भाषणकर्त्ता प्रो० सुरेश मिश्र (अवकाशप्राप्त) इतिहास, गोपाल द्वारा अमूर्त धरोहर यथा, लोक-गीत, लोक नृत्य, लोक-पकवान, लोक व्यौहार, लोक-क्रीड़ा, स्थानीय ऐतिहासिक स्थल, इत्यादि की विस्तृत व्याख्या की गई तथा उन्हें संरक्षित करने पर जोर दिया गया। वहीं विशेष आमंत्रित वक्ता डॉ० डी० एन० सिन्हा (अवकाशप्राप्त), भारतीय पुरातत्व विभाग, पटना ने मूर्त धरोहरों, विशेषकर बिहार राज्य के संदर्भ में अपने Power-Point-प्रस्तुती के माध्यम से विस्तृत चर्चा की। इस सत्र में धन्यवाद ज्ञापन प्रो० राजनाथ यादव ने वक्ताओं, प्रतिभागियों एवं वेबीनार की अध्यक्ष, महाविद्यालय के प्राचार्य के प्रति कृतज्ञता जाहिर का दिया।

पैनल-चर्चा प्रो० विश्वमोहन पांडेय, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, तल्ला सल्ट, अल्मोड़ा, उत्तराखंड के संयोजन में प्रारंभ हुआ। इसमें तीन प्रमुख वक्ताओं; क्रमशः डॉ० शिवकुमार मिश्र, (निदेशक, महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा एवं संरक्षक, गान्धी संग्रहालय, मितिहरवा, मोतीहारी, बिहार) डॉ० अभय कुमार (प्रोफेसर इतिहास, डी० ए० वी० महाविद्यालय, सिवान, बिहार) तथा डॉ० अविनाश कुमार झा (सीनियर रिसर्च फेलो, पुडुचेरी विश्वविद्यालय, पुडुचेरी) ने अपने-अपने सारगर्भित विचारों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। डॉ० शिवकुमार मिश्र, भारतीय धरोहरों की संजोने में संग्रहालय की भूमिका पर, डॉ० अभय कुमार धरोहरों से संबंधित कागजात को धरोहर-जिज्ञासुओं हेतु संभाल कर रखने में अभिलेखागार के महत्व पर तथा डॉ० अविनाश कुमार झा ने पर्यटन को भारतीय धरोहरों को विकसित करने के माध्यम के रूप में महत्व को पर लोगों का ज्ञान-वर्द्धन

Scanned with CamScanner

किया। प्रो० विश्व मोहन पाण्डेय ने अपनी निष्कर्षीय टिप्पणी में बदलते समय के अनुसार धरोहरों को सुरक्षित करने में तकनीकी प्रयोग पर जोर दिया। साथ ही आने वाली पीढ़ी को इसके प्रति सजग करने की जरूरत पर भी प्रकाश डाला।

औपनिवेशिक अन्तराल के पश्चात् प्रो० मुकेश कुमार (इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार) के संयोजन एवं संचालन में तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ। इस सत्र में छः वक्ताओं ने भारतीय इतिहास की विरासत के विभिन्न कालों एवं क्षेत्रों की ऐतिहासिकता पर तथा उन महत्वपूर्ण स्रोतों को सुरक्षित रखने पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सुरक्षित रखने पर जोर डाला। डॉ० धीरेन्द्र मोहन झा (एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास, देशबन्धु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) ने सिक्कों के इतिहास पर चर्चा करते हुए मगध साम्राज्य के अभ्युदय एवं वर्चस्व को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सिक्कों को स्रोत के रूप में प्रयोग कर इतिहास लिखने की जरूरत का आह्वान प्रतिभागियों से किया। प्रो० अनिल कुमार पाण्डेय (हेमचन्द्र यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़) ने Power-point प्रस्तुति के द्वारा छत्तीसगढ़ के जनजातीय संस्कृति से प्रतिभागियों को अवगत कराया तथा उनकी संस्कृति को अलग विशिष्ट पहचान के साथ इतिहास में उचित स्थान देने की वकालत की। मध्यकालीन इतिहास से संबंधित धरोहरों पर डॉ० शाहिद परवेज (राजकीय महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकर नगर) तथा प्रो० अविनाश कुमार झा (इतिहास विभाग, पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय, पटना) ने प्रकाश डाला। डॉ० परवेज मुगलकालीन वास्तुकला, विशेषकर अकबर के फतेहपुर सिकरी स्थित बुलंद दरवाजा, पंचमहला, इत्यादि एवं शाहजहाँ के दिल्ली स्थित जामा-मस्जिद, लाल किला सहित तख्त-ए-ताऊस पर चर्चा की वहीं प्रो० अविनाश कुमार झा ने इतिहास-लेखन की परंपरा पर चर्चा करते हुए मिथिला क्षेत्र के सांस्कृतिक धरोहरों के विशेष संदर्भ में स्थानीय एवं क्षेत्रीय संस्कृति को संरक्षित कर लोगों के समक्ष लाने हेतु प्रेरित किया। डॉ० प्रेया पाठक (असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, वसंता महिला महाविद्यालय, वाराणसी) ने चुनार एवं रामनगर किले के उद्भव, एवं महत्व की चर्चा अपने Power-point प्रस्तुति के द्वारा की, वहीं डॉ०

Scanned with CamScanner

Date :
Page No. :

हरीश कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय महिला महाविद्यालय, सलेमपुर, देवरिया) ने ब्रिटिशकालीन स्थापत्य कला की विशेषताओं की ओर ध्यान देते हुए उसे संरक्षित करने की बात कही। मझौली राज, सलेमपुर स्थित कुछ ब्रिटिशकालीन भवनों की चर्चा भी उन्होंने अपने सारगर्भित व्याख्यान में किया। प्रो० मुकेश कुमार ने अपने वक्तव्य में जीवन में सांस्कृतिक धरोहर की जरूरतों और उससे प्राप्त होने वाली प्रसन्नता का जिक्र किया।

समापन समारोह डॉ० सुकृति मिश्रा के संयोजन में किया गया तथा इस सत्र में सम्मिलित अतिथियों का स्वागत डॉ० पवन गुप्ता (असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र) के द्वारा किया गया। इस सत्र के अंतर्गत विशेष आमंत्रित वक्ता डॉ० कमलेश वर्मा (एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, सेवापुरी, वाराणसी) ने साहित्य को धरोहर के रूप में स्वीकार करते हुए उसे उचित संरक्षण देने पर जोर दिया। उनका मानना कि साहित्य ने छोटी-छोटी परंपराओं को संभाल कर रखा है जिसे इतिहास में उतना महत्त्व नहीं मिलता, हमें साहित्यिक धरोहर को नए नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करता है। समापन-भाषणकर्ता प्रो० हिमांशु चतुर्वेदी (इतिहास विभाग, दी० द० उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) ने भारत के इतिहास को 'प्रतिरोध का इतिहास' की संज्ञा देते हुए भारत की अद्भुत शक्ति एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला। भारतीय इतिहास को भौगोलिक-राजनीतिक न मानकर इसे भौगोलिक सांस्कृतिक इतिहास के रूप में देखने की जरूरत है। उनके अनुसार अनेक प्रकार के आक्रमणों के बावजूद भारत का इतिहास एक है, श्रेष्ठ है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ० सविता पाठक ने भारतवर्ष की अद्भुत संस्कृति, परंपरा एवं धरोहरों की चर्चा करते हुए उसके क्षेत्रीय एवं स्थानीय संस्कृति को संजोकर रखने पर जोर डाला। उनका मानना कि स्थानीय संस्कृति की कमी भी भारतीय एकता का विरोधक तत्व नहीं

Scanned with CamScanner

Date :

Page No. :

मानना चाहिए, बल्कि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में इन स्थानीय संस्कृतियों के महत्वपूर्ण योगदान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्यूंकि इसी प्रोत्साहन से संस्कृतिक धरोहरों की रक्षा भी संभव हो सकेगी।

वेबीनार के संयोजक डॉ० पंकज कुमार झा (नोडल अधिकारी, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत') ने सभी वक्ताओं, प्रतिभागियों एवम महाविद्यालय परिवार को धन्यवाद देते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में सरकार द्वारा किये जा रहे धरोहर संरक्षण तथा पर्यटन विकास के प्रयासों की प्रसंशा की और भविष्य में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने का आश्वासन दिया।

—०—.

Pankaj k. Jha

नोडल अधिकारी, EBSB

पं० क० प० त्रि० रा० स्ना० महा०, चंदौली

Scanned with CamScanner